अष्टक विधि

ॐ ह्रीं श्री पीठशुद्धिकारणं करोमीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री स्वस्तिक स्थापनं करोमीति स्वाहा।

अनामिका अंगुलि से स्वस्तिक निकालना

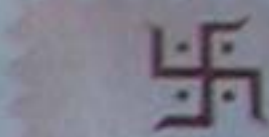

अनामिका अंगुलि से स्वस्तिक निकालना चाहिये

५ पंच गुरूणांवन्दे

२४ जिणंच सव्वदावंदे २४ 卐 ४ चारणं चरणं सदा वंदे

३ रयणत्तयंच वंदे

फिर स्वस्तिक से ऊपर मुट्ठी से १३ पुँज रखना

मोक्षमार्ग - ० सिद्धशिला

गुरू - ०००३ रत्नत्रय सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र

शास्त्र - ००००४ अनुयोग-प्रथमानुयोग, करणा, चरणा, द्रव्या,

देव - ००००० पंचपरमेष्ठी णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं

नोट :- आव्हाननं, स्थापनं, सन्निधीकरणं, अर्ध्दचन्द्राकार सिद्धशिला पर ही करना और अष्टद्रव्य स्वस्तिक पर चढ़ाना। अष्टद्रव्य में, गंधोदक, चंदनं पुष्प, दीपक (आरती) ये निर्माल्य नहीं होते हैं।

(१) देव ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्ती, तीन लोक संबंधी अनंतानंत समस्त देवशास्त्र गुरुभ्यों।

अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति अव्हाननं।

अत्रतिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनं।

अत्र मम सन्निहितो भव भव वष्ट् सन्निधीकरणं।

१) ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्ती तीन लोकसंबंधी अनंतानंत समस्त देवशास्त्र गुरुभ्यो: मम जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय: जलं निर्व.

२) ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्ती तीन लोकसंबंधी अनंतानंत समस्त देवशास्त्र गुरुभ्यो: मम संसारताप विनाशनाय चंदन निर्व.

३) ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्ती तीन लोकसंबंधी अनंतानंत समस्त देवशास्त्र गुरुभ्यो: मम अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान निर्व. स्वाहा।

४) ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्ती तीन लोकसंबंधी अनंतानंत समस्त देवशास्त्र गुरुभ्यो: मम कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

५) ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्ती तीन लोकसंबंधी अनंतानंत समस्त देवशास्त्र गुरुभ्यो: मम क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

६) ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्ती तीन लोकसंबंधी अनंतानंत समस्त देवशास्त्र गुरुभ्यो: मम मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

७) ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्ती तीन लोकसंबंधी अनंतानंत समस्त देवशास्त्र गुरुभ्यो: मम अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

८) ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्ती तीन लोकसंबंधी अनंतानंत समस्त देवशास्त्र गुरुभ्यो: मम मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

९) ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्ती तीन लोकसंबंधी अनंतानंत समस्त देवशास्त्र गुरुभ्यो: मम अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदन तंदुल पुष्पकैश्चरू सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवलमंगलगान रवाकुले जिनगृहे जिननाथ महंयजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्ती तीन लोकसंबंधी अनंतानंत समस्त देवशास्त्र गुरुओं के चरणों में मेरा त्रियोगशुद्धिपूर्वक त्रिकाल का नवकोटीसे अनंतानंतबार अष्टकर्मक्षयार्थ शतशः पंचांग नमोस्तु जयमाला महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(२) शास्त्र- ॐ ह्रीं श्री द्वादशांग श्रुतदेवी मम अज्ञानांधकार विनाशनाय महार्घ्यंनिर्वपामीति स्वाहा।

(३) गुरू- ॐ ह्रीं श्री तीन कम ९ कोटी मुनिमहाराज चरणोभ्यो: महार्घ्यंनिर्वपामीति स्वाहा।

(४) ॐ ह्रीं श्री समस्त ८ कोटी ५६ लाख ९७ हजार ४८१ कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्यचैत्यालयोभ्यो महार्घ्यंनिर्वपामीति स्वाहा।

(५) ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्ती तीन लोकसंबंधी अनंतानंत समस्त निर्वाण क्षेत्रभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा (नमोस्तु)

(६) ॐ ह्रीं श्री समस्त ३० चौबीसी भ्यों: महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(७) ॐ ह्रीं श्री २४ तीर्थंकर यक्षयक्षिणी अर्घ्यंगृहणं गृहणं समर्पयामीति स्वाहा, जयजिनेन्द्र।

फिर देवशास्त्रगुरु की आरती करके शांतिधारा, पुष्पांजलि करके ९ बार जप करके नमोस्तु करना। विसर्जन करना।

देव **शास्त्र** **मुनि**

जिनगृहे जिननाथ महंयजे **जिनगृहे जिनशास्त्र महंयजे** **जिनगृहे मुनिराज महंयजे**

मंदिर जी में अष्टक संक्षेप में ठीक इस प्रकार ही करना किन्तु यदि तुम्हारे घर पर मुनि, आर्यिका, ऐलकजी आहार के निमित पधारे हुए हैं तो देवशास्त्र गुरू के स्थान पर उन साधु का नाम लेकर पूरा अष्टक इसी प्रकर ही करना, किन्तु यदि तुम्हारे घर क्षु.क्षु. है तो उनका पुरा अष्टक नहीं करके केवल "उदक चंदन" बोलकर अंत में ममगृहे मुनिराज (माताजी) महंयजे, एक अर्घ करके साधु को पंचांग नमस्कार करना। आरती पूजा होने के बाद में आशिका लेना।

"श्री जिनवर की आशिका लीजै शीश चढ़ाय, भवभव के पातक कटैं दुःख दूर हो जायें"

गंधोदक मंत्र

निर्मलं निर्मलीकरणं पवित्रं पाप नाशनम्।
जिन गन्धोदकम् वन्दे कर्माष्टक निवारणम्॥